13/05/2020 B.A. Part - I
सामान्य हिन्दी (रचना · अभिव्यक्ति)
डॉ॰ चन्दा कुमारी, गेस्ट टीचर
हिन्दी विभाग, रोहतास महिला महाविद्यालय
सासाराम रोहतास

आज के समाज में जो मनुष्य है वह मात्र खोखली सभ्यता और नागरिकता को दर्शाता है। वह साँप तो नहीं है मगर नागरिक जीवन में मात्र डसने की जहरीली प्रवृति मनुष्य में व्याप्त है। आज समाज में हर एक व्यक्ति साँप की तरह अपनी जीवन शैली को जी रहा है। वक्त मिलते ही अपने व्यवहार रूपी विष से अपने आस-पास के लोगो का चोट पहुँचाता है। आज के दौर के मानव अपनी सभ्यता को भूल चुका है। यहाँ कवि कहते हैं कि मैं पूछता हूँ कि तुम साँप नहीं हो फिर भी तुम्हारे अन्दर नैतिकता नहीं है और व्यवहारिकता को भूल गये हो।